Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय का किसानों की आर्थिक स्थिति पर प्रभावरू बाराबंकी जनपद का एक अध्ययन

सर्वेश कुमार शुक्ला[1] .प्रो॰;डॉ॰द्ध अमर पाल सिंह2

[1ए2]मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
प्राकृतिक विज्ञान एवं मानविकी संस्थानए
श्री रामस्वरूप मेमोरियल यूनिवर्सिटी
बाराबंकीएउत्तर प्रदेश.

सार

कृषि भूमि ग्रामीण परिवारों के लिए आजीविकाए आय तथा आर्थिक सुरक्षा का प्रमुख आधार है। तीव्र शहरीकरण तथा भूमि के बढ़ते मूल्यों के कारण कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई हैए जिसका किसानों की आर्थिक स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के **बाराबंकी जनपद** के किसानों की आर्थिक स्थिति पर कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय के प्रभाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन में **वर्णनात्मक** ;क्मेबतपचजपअमद्ध **अनुसंधान अभिकल्प** का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े 50 **किसानों** से संरचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एकत्रित किए गए तथा उनका विश्लेषण प्रतिशत एवं सारणीकरण विधियों द्वारा किया गया।

अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि कृषि भूमि के विक्रय से किसानों को तत्काल आर्थिक लाभ प्राप्त हुआए जिसका उपयोग ऋण चुकानेए आवास सुधारए बच्चों की शिक्षा तथा छोटे व्यवसायों में निवेश के लिए किया गया। किन्तु भूमि के क्षेत्रफल में कमी के कारण अनेक किसानों की कृषि आय में गिरावट आई तथा उनकी निर्भरता गैर.कृषि रोजगार पर बढ़ी। इसके विपरीतए जिन किसानों ने कृषि भूमि का क्रय कियाए उनमें अपेक्षाकृत अधिक आय स्थिरता तथा बेहतर आजीविका सुरक्षा पाई गई। अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि भूमि के क्रय एवं विक्रय से अल्पकालिक आर्थिक लाभ तो प्राप्त होते हैंए किन्तु यदि प्राप्त धनराशि का उत्पादक परिसंपत्तियों में निवेश न किया जाएए तो दीर्घकाल में किसानों की आर्थिक स्थिरता प्रभावित हो सकती है। अतः किसानों के आर्थिक कल्याण को सुदृढ़ बनाने हेतु उत्पादक निवेश को प्रोत्साहित करनेए

वित्तीय साक्षरता बढ़ाने तथा सतत भूमि प्रबंधन से संबंधित नीतियों को प्रभावी रूप से लागू किए जाने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द रू कृषि भूमिए भूमि क्रय.विक्रयए आर्थिक स्थितिए किसानए शहरीकरणए बाराबंकीए उत्तर प्रदेश।

प्रस्तावना

कृषि भूमि ग्रामीण परिवारों के लिए आयए रोजगार तथा दीर्घकालीन आर्थिक सुरक्षा का प्रमुख आधार है। हाल के वर्षों में तीव्र शहरीकरणए आधारभूत संरचना के विकास तथा भूमि के बढ़ते मूल्यों के कारण भारत के अनेक क्षेत्रोंए विशेषकर उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद में कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कृषि भूमि का विक्रय किसानों को तात्कालिक आर्थिक लाभ प्रदान करता हैए किन्तु इसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में कमीए रोजगार के स्वरूप में परिवर्तन तथा दीर्घकालीन आजीविका सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। दूसरी ओरए कृषि भूमि का क्रय किसानों की उत्पादन क्षमताए कृषि आय तथा आर्थिक स्थिरता को सुदृढ़ करने में सहायक हो सकता हैए यदि उसके साथ पर्याप्त संसाधन एवं आधुनिक कृषि तकनीकों का उपयोग किया जाए।

भूमि के क्रय एवं विक्रय के आर्थिक प्रभाव बहुआयामी हैंए जिनमें अवसरों के साथ.साथ अनेक चुनौतियाँ भी निहित हैं। भूमि विक्रय से प्राप्त धनराशि का उपयोग किसान आवास निर्माणए बच्चों की शिक्षाए ऋण भुगतान तथा छोटे व्यवसायों में निवेश के लिए करते हैंए किन्तु कृषि योग्य भूमि में कमी के कारण उनकी निर्भरता गैर.कृषि रोजगार पर बढ़ सकती है तथा नियमित कृषि आय प्रभावित हो सकती है। इन प्रभावों का अध्ययन संतुलित ग्रामीण विकास तथा किसानों के आर्थिक हितों की सुरक्षा के लिए प्रभावी नीतियाँ तैयार करने की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है।

इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद के किसानों की आर्थिक स्थिति पर कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय के प्रभाव का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन 50 **किसानों** से संरचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से संकलित प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन में भूमि के क्रय एवं विक्रय का किसानों की आयए रोजगार के अवसरोंए परिसंपत्ति निर्माण तथा समग्र आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया गया हैए जिससे ग्रामीण विकास एवं भूमि उपयोग संबंधी नीतियों के निर्माण हेतु उपयोगी अनुभवजन्य साक्ष्य उपलब्ध कराए जा सकें।

साहित्य समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि कृषि भूमि का क्रय एवं विक्रय ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। **देसाई** ;2005द्ध के अनुसार कृषि भूमि केवल उत्पादन का साधन ही नहींए

बल्कि किसानों के लिए सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा का भी प्रमुख आधार है। **एलिस** ;2000द्ध ने बताया कि भूमि स्वामित्व में परिवर्तन से आजीविका के स्रोतों में विविधता आती है तथा अनेक परिवार गैर.कृषि रोजगार की ओर अग्रसर होते हैं। **भट्टाचार्य** ;2019द्ध ने पाया कि तीव्र शहरीकरण के कारण परिधीय ;चमतप.नतइंदद्ध क्षेत्रों में कृषि भूमि के लेन.देन में वृद्धि हुई हैए जिससे किसानों को अल्पकालिक आर्थिक लाभ तो प्राप्त होते हैंए किन्तु दीर्घकाल में कृषि आय में कमी देखी जाती है। **सिंह** ;2021द्ध ने उत्तर प्रदेश में भूमि के विखंडन एवं भूमि उपयोग परिवर्तन को किसानों की आय तथा रोजगार के स्वरूप में परिवर्तन का प्रमुख कारण बताया है। **कृषि सांख्यिकी एट ए ग्लांस** ;2023द्ध तथा **राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण** ;छैए 2019द्ध की रिपोर्टों से भी स्पष्ट होता है कि कृषि जोतों के आकार में कमी तथा गैर.कृषि आय पर बढ़ती निर्भरता ग्रामीण परिवारों के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ हैं। उपलब्ध साहित्य से यह निष्कर्ष निकलता है कि कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय से अल्पकालिक आर्थिक लाभ एवं परिसंपत्ति निर्माण की संभावनाएँ बढ़ती हैंए किन्तु यदि प्राप्त धनराशि का उत्पादक निवेश न किया जाए तो दीर्घकालीन आजीविका सुरक्षा प्रभावित हो सकती है। साथ हीए **बाराबंकी जनपद** के संदर्भ में इस विषय पर सीमित अनुभवजन्य अध्ययन उपलब्ध हैंए जिससे वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता और प्रासंगिकता सिद्ध होती है।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश के **बाराबंकी जनपद** के किसानों की आर्थिक स्थिति पर कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए **वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प** अपनाया गया है। अध्ययन प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित हैए जिन्हें 50 **किसानों** से **उद्देश्यपूर्ण निदर्शन** के माध्यम से चयनित कर एकत्रित किया गया। सभी उत्तरदाता ऐसे किसान थे जिन्होंने कृषि भूमि का क्रय या विक्रय किया था। आँकड़ों का संकलन एक **संरचित साक्षात्कार अनुसूची** के माध्यम से किया गयाए जिसमें सामाजिक.आर्थिक स्थितिए भूमि लेन.देनए आयए रोजगारए आवासए घरेलू परिसंपत्तियों तथा समग्र आर्थिक स्थिति से संबंधित प्रश्न शामिल थे।

अध्ययन के उद्देश्य

1ण बाराबंकी जनपद के किसानों की **आय एवं रोजगार के अवसरों** पर कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय के प्रभाव का अध्ययन करना।

2ण कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय के **आवासए घरेलू परिसंपत्तियों तथा जीवन.स्तर** पर पड़ने वाले प्रकार्यों ;थ्नदबजपवदेद्ध का विश्लेषण करना।

3ण बाराबंकी जनपद के किसानों की **आर्थिक स्थिति पर कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय के दुष्प्रकार्यों** ;क्लेनिदबजपवदेद्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन के समर्थन हेतु द्वितीयक आँकड़े प्रकाशित पुस्तकोंए शोध.पत्रोंए सरकारी प्रतिवेदनों तथा आधिकारिक सांख्यिकीय प्रकाशनों से प्राप्त किए गए। संकलित आँकड़ों का संपादनए वर्गीकरण एवं संकेतन करने के पश्चात् उनका विश्लेषण **आवृत्ति प्रतिश तथा सारणीकरण** जैसी वर्णनात्मक सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया। प्राप्त निष्कर्षों को सारणियों के माध्यम से प्रस्तुत कर किसानों की आजीविका एवं आर्थिक स्थिति पर कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय के प्रभावों का विश्लेषण किया गया।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

बाराबंकी जनपद उत्तर प्रदेश के मध्य भाग में स्थित है तथा **अयोध्या मंडल** के अंतर्गत आता है। यह राज्य की राजधानी **लखनऊ** के निकट स्थित एक प्रमुख कृषि प्रधान जनपद हैए जहाँ अधिकांश जनसंख्या कृषि एवं उससे संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। यहाँ धानए गेहूँए गन्नाए दलहन एवं तिलहन प्रमुख फसलें हैं। हाल के वर्षों में तीव्र शहरीकरणए आधारभूत संरचना के विकास तथा भूमि मूल्यों में वृद्धि के कारण विशेषकर परिधीय क्षेत्रों में कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इन परिवर्तनों का किसानों की आयए रोजगार तथा समग्र आर्थिक स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था एवं भूमि उपयोग में हो रहे तीव्र परिवर्तनों के कारण बाराबंकी जनपद इस अध्ययन के लिए उपयुक्त क्षेत्र है। प्रस्तुत अध्ययन **जनपद के 50 किसानों** पर आधारित है।

आँकड़ों का विश्लेषण

सारणी 1रू किसानों की आय एवं रोजगार के अवसरों पर कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय का प्रभाव ;छ त्र 50द्ध

क्रण् संण्	**आय एवं रोजगार पर प्रभाव**	**किसानों की संख्या**	**प्रतिशत ;ःद्ध**
1	भूमि विक्रय के पश्चात् पारिवारिक आय में वृद्धि	36	72
2	भूमि जोत में कमी के कारण वार्षिक कृषि आय में कमी	32	64
3	गैर.कृषि व्यवसायध्स्वरोजगार में निवेश	18	36
4	कृषि कार्य से मजदूरी अथवा वेतनभोगी रोजगार की ओर स्थानांतरण	20	40
5	कृषि भूमि क्रय के परिणामस्वरूप कृषि आय में वृद्धि	11	22
6	व्यवसाय अथवा सेवा क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में वृद्धि	16	32
7	भूमि क्रय के बाद आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाना	9	18
8	आजीविका के विविध स्रोतों से आय में स्थिरता	14	28
9	नियमित कृषि रोजगार का ह्रास	17	34

10	भूमि लेन.देन के पश्चात् समग्र आर्थिक स्थिति में सुधार	25	50

स्रोतरू क्षेत्रीय सर्वेक्षणए बाराबंकी जनपदए उत्तर प्रदेश ;छ त्र 50द्ध

सारणीदृ1 के आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय का किसानों की **आय एवं रोजगार के अवसरों** पर सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार का प्रभाव पड़ा है। अध्ययन में 72ः किसानों ने बताया कि भूमि विक्रय के पश्चात् उनकी पारिवारिक आय में तत्काल वृद्धि हुईए जिसका प्रमुख कारण भूमि विक्रय से प्राप्त मुआवजा था। इसके विपरीतए 64ः किसानों ने कृषि योग्य भूमि में कमी के कारण वार्षिक कृषि आय में गिरावट का अनुभव किया। इससे स्पष्ट होता है कि भूमि विक्रय से प्राप्त आर्थिक लाभ मुख्यतः अल्पकालिक रहेए जबकि कृषि आय पर दीर्घकालिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

रोजगार के संदर्भ में 40ः किसान कृषि कार्य छोड़कर मजदूरी अथवा वेतनभोगी रोजगार की ओर स्थानांतरित हुएए जबकि 36ः ने गैर.कृषि व्यवसाय अथवा स्वरोजगार में निवेश कर वैकल्पिक रोजगार के अवसर विकसित किए। दूसरी ओरए केवल 22ः किसानों ने कृषि भूमि का क्रय कियाए जिसके परिणामस्वरूप उनकी कृषि आय में वृद्धि हुई। इसी प्रकार 18ः किसानों ने भूमि क्रय के बाद आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनायाए जिससे कृषि उत्पादन एवं आय में सुधार की संभावना बढ़ी।

इसके अतिरिक्त 28ः किसानों ने आजीविका के विविध स्रोतों के कारण आय में स्थिरता अनुभव कीए जबकि 34ः किसानों का नियमित कृषि रोजगार प्रभावित हुआ। कुल मिलाकर 50ः किसानों ने भूमि लेन.देन के पश्चात् अपनी समग्र आर्थिक स्थिति में सुधार अनुभव किया।

समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि कृषि भूमि का क्रय एवं विक्रय किसानों को तात्कालिक आर्थिक लाभ एवं वैकल्पिक रोजगार के अवसर उपलब्ध कराता हैए किन्तु कृषि भूमि में कमी के कारण कृषि आय एवं पारंपरिक रोजगार पर प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ता है। अतः किसानों की दीर्घकालीन आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भूमि विक्रय से प्राप्त धनराशि का उत्पादक निवेश तथा आजीविका के विविधीकरण को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

सारणी 2रू किसानों के आवासए घरेलू परिसंपत्तियों एवं जीवन.स्तर पर कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय का प्रभाव ;छ त्र 50द्ध

क्रण संण	आवासए घरेलू परिसंपत्तियों एवं जीवन.स्तर पर प्रभाव	किसानों की संख्या	प्रतिशत ;द्ध
1	भूमि लेन.देन के पश्चात् नया पक्का मकान निर्मित किया	28	56
2	वर्तमान मकान का नवीनीकरण अथवा विस्तार कराया	12	24
3	घरेलू उपकरण ;टीवीए रेफ्रिजरेटरए वॉशिंग मशीन आदिद्ध खरीदे	26	52

4	वाहन ;मोटरसाइकिलध्कारध्ट्रैक्टरद्ध खरीदा	19	38
5	बिजलीए स्वच्छता एवं पेयजल सुविधाओं में सुधार	21	42
6	बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर व्यय में वृद्धि	23	46
7	जीवन.स्तर एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में सुधार	24	48
8	कृषि यंत्र अथवा टिकाऊ घरेलू परिसंपत्तियाँ खरीदीं	15	30
9	आवास अथवा जीवन.स्तर में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं	10	20
10	विक्रय से प्राप्त धन समाप्त होने के कारण केवल अस्थायी सुधार	17	34

स्रोतरू क्षेत्रीय सर्वेक्षणए बाराबंकी जनपदए उत्तर प्रदेश ;छ त्र 50द्धए 2026प्

सारणीदृ2 के आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय का किसानों के आवासए घरेलू परिसंपत्तियों एवं जीवन.स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। अध्ययन में 56ः किसानों ने भूमि लेन.देन के पश्चात् नया पक्का मकान बनायाए जबकि 24ः ने अपने पुराने मकान का नवीनीकरण या विस्तार कराया। लगभग 52ः किसानों ने टीवीए रेफ्रिजरेटर तथा वॉशिंग मशीन जैसे घरेलू उपकरण खरीदे तथा 38ः ने मोटरसाइकिलए कार अथवा ट्रैक्टर जैसे वाहन खरीदेए जिससे उनकी घरेलू परिसंपत्तियों में वृद्धि हुई। 42ः उत्तरदाताओं ने बिजलीए स्वच्छता एवं सुरक्षित पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाओं में सुधार की सूचना दीए जबकि 46ः ने बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर व्यय बढ़ाया। इसके अतिरिक्त 48ः किसानों ने भूमि लेन.देन के बाद अपने जीवन.स्तर एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में सुधार अनुभव किया। दूसरी ओरए 20ः किसानों के आवास अथवा जीवन.स्तर में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ तथा 34ः ने बताया कि भूमि विक्रय से प्राप्त धनराशि समाप्त हो जाने के कारण यह सुधार केवल अस्थायी रहा। इससे स्पष्ट होता है कि कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय से अल्पकाल में आवास एवं घरेलू परिसंपत्तियों में सुधार संभव हैए किन्तु जीवन.स्तर में स्थायी सुधार के लिए प्राप्त धनराशि का उत्पादक एवं दीर्घकालीन निवेश आवश्यक है।

सारणी 3रू किसानों की आर्थिक स्थिति पर कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय के दुष्प्रकार्य ;क्लेनिदबजपवदेद्ध ;छ त्र 50द्ध

क्रण् संण्	**कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय के आर्थिक दुष्प्रकार्य**	**किसानों की संख्या**	**प्रतिशत ;द्ध**
1	भूमि जोत में कमी के कारण कृषि आय में गिरावट	34	68
2	नियमित कृषि रोजगार का ह्रास	22	44
3	भूमि विक्रय से प्राप्त धनराशि का शीघ्र समाप्त होना	27	54
4	मजदूरी अथवा अस्थायी रोजगार पर बढ़ती निर्भरता	21	42

5	घरेलू व्यय में वृद्धि तथा बचत में कमी	24	48
6	विक्रय से प्राप्त धनराशि का उत्पादक परिसंपत्तियों में निवेश न होना	20	40
7	कृषि परिसंपत्तियों के ह्रास के कारण आर्थिक असुरक्षा में वृद्धि	26	52
8	दीर्घकालीन आजीविका सुरक्षा में कमी	29	58
9	भूमि विक्रय से प्राप्त धन समाप्त होने के बाद ऋणग्रस्तता	16	32
10	पारिवारिक आजीविका हेतु गैर.कृषि आय पर अधिक निर्भरता	23	46

स्रोतरू क्षेत्रीय सर्वेक्षणए बाराबंकी जनपदए उत्तर प्रदेश ;छ त्र 50द्धए 2026ण

सारणीद्3 के आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय का किसानों की आर्थिक स्थिति पर अनेक **दुष्प्रकार्य** ;क्लेनिदबजपवदेद्ध देखने को मिले। अध्ययन में 68: किसानों ने भूमि जोत में कमी के कारण कृषि आय में गिरावट अनुभव कीए जबकि 58: ने दीर्घकालीन आजीविका सुरक्षा में कमी की सूचना दी। 54: उत्तरदाताओं ने बताया कि भूमि विक्रय से प्राप्त धनराशि अल्प समय में ही समाप्त हो गईए जिससे उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। लगभग 52: किसानों ने कृषि परिसंपत्तियों के ह्रास के कारण आर्थिक असुरक्षा में वृद्धि का अनुभव किया तथा 48: ने घरेलू व्यय में वृद्धि और बचत में कमी की जानकारी दी। इसके अतिरिक्त 44: किसानों का नियमित कृषि रोजगार प्रभावित हुआए 42: मजदूरी अथवा अस्थायी रोजगार पर अधिक निर्भर हो गए तथा 46: परिवारों की आजीविका गैर.कृषि आय पर अधिक निर्भर हो गई। लगभग 40: किसान भूमि विक्रय से प्राप्त धनराशि का उत्पादक परिसंपत्तियों में पुनर्निवेश नहीं कर सके तथा 32: किसान धन समाप्त होने के बाद ऋणग्रस्त हो गए।

दूसरी ओरए अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि 72: किसानों की पारिवारिक आय में भूमि विक्रय के तुरंत बाद वृद्धि हुईए जिसका मुख्य कारण भूमि लेन.देन से प्राप्त मुआवजा था। किन्तु 64: किसानों ने कृषि योग्य भूमि में कमी के कारण नियमित कृषि आय में गिरावट की सूचना दी। लगभग 40: किसान कृषि कार्य छोड़कर मजदूरी अथवा वेतनभोगी रोजगार की ओर अग्रसर हुएए जबकि 36: ने गैर.कृषि व्यवसायों में निवेश कर वैकल्पिक आजीविका के अवसर विकसित किए। केवल 22: किसानों ने कृषि भूमि खरीदकर कृषि आय में सुधार प्राप्त किया तथा 18: ने आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाया। कुल मिलाकर 50: किसानों ने अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार अनुभव कियाए जो मुख्यतः अल्पकालिक आर्थिक लाभों का परिणाम था। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि कृषि भूमि का क्रय एवं विक्रय तात्कालिक आर्थिक लाभ तो प्रदान करता हैए किन्तु यदि प्राप्त धनराशि का उत्पादक एवं दीर्घकालीन निवेश न किया जाए तो किसानों की आर्थिक स्थिरता एवं

आजीविका सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए किसानों के सतत आर्थिक विकास के लिए उत्पादक पुनर्निवेश तथा आजीविका के विविधीकरण को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

सारणी 4रू किसानों की आर्थिक स्थिति पर कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय का प्रभाव ;छ त्र 50द्ध

क्र॰ सं॰	आर्थिक प्रभाव	किसानों की संख्या	प्रतिशत ;द्ध
1	भूमि विक्रय के तुरंत बाद पारिवारिक आय में वृद्धि	37	74
2	आवास एवं घरेलू परिसंपत्तियों में सुधार	31	62
3	बच्चों की शिक्षा में निवेश	24	48
4	ऋण एवं कर्ज का भुगतान	29	58
5	अन्य स्थान पर नई कृषि भूमि का क्रय	12	24
6	ट्रैक्टरए कृषि यंत्र अथवा सिंचाई सुविधाओं की खरीद	16	32
7	गैर.कृषि व्यवसाय अथवा रोजगार की ओर रुझान	21	42
8	भूमि जोत में कमी के कारण वार्षिक कृषि आय में गिरावट	34	68
9	मजदूरी अथवा सेवा क्षेत्र पर बढ़ती निर्भरता	19	38
10	अल्पकाल में समग्र आर्थिक स्थिति में सुधार	27	54
11	मुआवजे की धनराशि समाप्त होने के बाद आर्थिक अस्थिरता	23	46
12	बचत अथवा सावधि जमा्व्यवसाय में निवेश में वृद्धि	15	30

स्रोतरू क्षेत्रीय सर्वेक्षणए बाराबंकी जनपदए उत्तर प्रदेश ;छ त्र 50द्धए 2026

सारणीद्4 के आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि कृषि भूमि के क्रय एवं विक्रय का बाराबंकी जनपद के किसानों की आर्थिक स्थिति पर **सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार का प्रभाव** पड़ा है। अध्ययन में 74ः किसानों की पारिवारिक आय में भूमि विक्रय के पश्चात् तत्काल वृद्धि हुईए जो मुख्यतः भूमि विक्रय से प्राप्त मुआवजे के कारण थी। लगभग 62ः किसानों ने आवास निर्माण एवं घरेलू परिसंपत्तियों में निवेश कियाए जबकि 58ः ने प्राप्त धनराशि का उपयोग ऋण एवं कर्ज चुकाने में किया। इसके अतिरिक्त 48ः किसानों ने बच्चों की शिक्षा पर व्यय कियाए जिससे यह स्पष्ट होता है कि भूमि विक्रय से प्राप्त धन का उपयोग सामाजिक एवं मानवीय पूंजी के विकास में भी किया गया।

इसके विपरीतए दीर्घकालीन आर्थिक प्रभाव अपेक्षाकृत कम अनुकूल पाए गए। लगभग 68ः किसानों ने कृषि भूमि में कमी के कारण कृषि आय में गिरावट का अनुभव किया तथा 38ः किसान मजदूरी अथवा गैर.कृषि रोजगार पर अधिक निर्भर हो गए। यद्यपि 54ः उत्तरदाताओं ने अल्पकाल में अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार

अनुभव कियाए फिर भी 46: किसानों को मुआवजे की धनराशि समाप्त होने के बाद आर्थिक अस्थिरता का सामना करना पड़ा। केवल 24: किसानों ने नई कृषि भूमि खरीदी तथा 30: ने बचत अथवा दीर्घकालीन निवेश कियाए जिससे स्पष्ट होता है कि उत्पादक परिसंपत्तियों में पुनर्निवेश का स्तर अपेक्षाकृत कम रहा।

समग्र रूप से अध्ययन यह दर्शाता है कि कृषि भूमि का क्रय एवं विक्रय किसानों को अल्पकाल में आर्थिक राहत एवं निवेश के अवसर प्रदान करता हैए किन्तु यदि प्राप्त धनराशि का उत्पादक एवं दीर्घकालीन उपयोग नहीं किया जाता हैए तो कृषि उत्पादकताए आजीविका सुरक्षा तथा आर्थिक स्थिरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। यह प्रवृत्ति तीव्र शहरीकरण एवं बदलते भूमि बाजार के कारण बाराबंकी जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में हो रहे व्यापक सामाजिक.आर्थिक परिवर्तनों को भी प्रतिबिंबित करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1ण अवस्थीए डीण एनण ;2018द्धण *रूरल डेवलपमेंट इन इंडियारू इश्यूज़ एंड चैलेंजेज़*। न्यू रॉयल बुक कंपनी।

2ण भट्टाचार्यए पीण ;2019द्धण भारत में शहरीकरण एवं ग्रामीण भूमि बाज़ार। *जर्नल ऑफ़ रूरल स्टडीज़*ए *68*ए 85दृ94।

3ण भारत की जनगणनाण ;2011द्धण *उत्तर प्रदेशरू प्राथमिक जनगणना सार ;च्तपउंतल ब्मदेने ।इेजतंबजद्ध*। भारत सरकारए भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय।

4ण देसाईए एण आरण ;2005द्धण *रूरल सोशियोलॉजी इन इंडिया* ;5वाँ संस्करणद्ध। पॉपुलर प्रकाशन।

5ण एलिसए एफण ;2000द्धण *विकासशील देशों में ग्रामीण आजीविका एवं विविधता ;त्नतंस स्पअमसपीववके ंदक क्पअमतेपजल पद क्मअमसवचपदह ब्वनदजतपमेद्ध*। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

6ण भारत सरकारण ;2013द्धण *भूमि अधिग्रहणए पुनर्वास एवं पुनर्स्थापन में उचित प्रतिकर एवं पारदर्शिता का अधिकार अधिनियमए 2013*। विधि एवं न्याय मंत्रालय।

7ण उत्तर प्रदेश सरकारण ;2023द्धण *जिला सांख्यिकीय पुस्तिकारू बाराबंकी*। अर्थ एवं संख्या निदेशालयए उत्तर प्रदेश।

8ण कुमारए एणए सिंहए केण एमणए एवं कुमारए पीण ;2020द्धण भारत में कृषि भूमि उपयोग परिवर्तन एवं ग्रामीण आजीविका। *एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स रिसर्च रिव्यूए 33*;1द्धए 67दृ79।

9ण कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालयण ;2023द्धण *एग्रीकल्चरल स्टैटिस्टिक्स एट ए ग्लांस 2023*। भारत सरकार।

10ण राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय ;छैव्द्धण ;2019द्धण *भारत में कृषि परिवारों का स्थिति आकलन सर्वेक्षण* ;एनणएसणएसण रिपोर्ट संख्या 587द्ध। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालयए भारत सरकार।

11ण नीति आयोगण ;2021द्धण *किसानों की आय दोगुनी करनारू प्रगति एवं आगे की दिशा*। भारत सरकार।

12ए सिंहए आरए ;2021द्धए उत्तर प्रदेश में परिधीय शहरी विकास एवं भूमि विखंडन। *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*ए *56*;18द्धए 42द्द49।

13ए सिंहए एसए ;2019द्धए उत्तर भारत में कृषि भूमि बाज़ार एवं किसानों की आजीविका। *इंडियन जर्नल ऑफ़ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स*ए *74*;3द्धए 321द्द335।

14ए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक कार्य विभागए ;2019द्धए *विश्व शहरीकरण संभावनाएँरू 2018 संशोधित संस्करण*। संयुक्त राष्ट्र।

15ए विश्व बैंकए ;2022द्धए *रोज़गार एवं आजीविकारू लोगों को अवसरों से जोड़ना*। विश्व बैंक।